International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान समय में हिन्दी माध्यम में शिक्षा की प्रासंगिकता

पूजा पाटीदार

शोधार्थी, हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविधालय (म.प्र.)

शिक्षा का समाज से बहुत गहरा संबंध है। हमारी भारतीय संस्कृति में शिक्षा देने वाले गुरू की महिमा को भगवान से भी ऊँचा दर्जा प्राप्त हैं। इसका कारण शिक्षा ही हैं। शिक्षा ही वह पतवार है जो हर परिस्थितियों में मनुष्य रूपि नाव को पार लगा सकती है। संस्कृत में कहा भी गया है- विधा ददाति विनयम्। अर्थात विधा से विनय की प्राप्ति होती है। शिक्षित मनुष्य हमेशा नम्र होता हैं। उसकी नम्रता का मूल स्वरूप शिक्षा ही होती हैं। शिक्षा के द्वारा ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। यहि कारण है कि हमारी संस्कृति में जो सोलह संस्कार हैं उनमें एक शिक्षा भी है। अर्थात हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों की महत्ता हैए उसमें शिक्षा को अनिवार्य माना गया हैं।

हमारे जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान हैं। यहॉ तक की हमारे भारतीय संविधान में भी ''शिक्षा का अधिकार'' (अनुस्छेद 21 क) में दिया गया है। शिक्षा के द्वारा ही मानव एवं समाज की उन्नती होती है। एक आत्मनिर्भर समाज बनाने के लिए शिक्षा एक सशक्त माध्यम है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज एवं देश में फैली बुराईयों जैसे भ्रष्टाचार, चौरी, डकैती आदि घटनाओं को रोका जा सकता हैं। शिक्षा मनुष्य को नये मार्ग दिखाती है, जिन पर वह चल कर नये-नये आयामों को छू सकता है। शिक्षा के द्वारा ही नित. नये आविष्करों के माध्यम से आज मनुष्य चॉद पर पहुँच गया है। शिक्षा सही मायनों में मनुष्य को मनुष्य बनाती है।

हमारा भारत देश अपनी शिक्षा प्रणाली अथवा दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहा है। शिक्षा को भारत में किसी चमत्कार से कम नहीं माना जाता हैं। शिक्षित मनुष्य का आदर एवं उसके प्रति तो श्रद्धा होती है- वह भारतीयों के अलावा कोई नहीं जान सकता । हमारें यहाँ शिक्षा को पवित्रता तथा जीवन की सद्भावना के साथ-साथ चरित्र निर्माण का आवश्यक तत्व माना गया हैं। शिक्षित मनुष्य को ही संस्कृति का सहेजक माना जा सकता है।

हमारी देवभाषा संस्कृत, को हिन्दी भाषा की जननी कह जाता है। संस्कृत से ही विभिन्न पडावों को पार करते. करते हिन्दी का जन्म हुआ हैं जैसे- वैदिक संस्कृत-लौकिक संस्कृत- पालि- प्राकृत-अपभ्रंश और अपभ्रंश से ही हिन्दी भाषा का विकास माना गया है। इसकी लिपि देवनागरी है, जिसका विकास उत्तरी बाह्मी लिपि से हुआ है। हिन्दी हमारी राज्य भाषा हैं। हमें अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाली भी यही हिन्दी भाषा हैं। आज भारत ही नहीं भारत के बाहर भी हिन्दी का बोलबाला हैं। मॉरीसस, गुयाना, सुरीनाम, फिजी जैसे देशों में आधे से ज्यादा लोग हिन्दी भाषा जानते हैं एवं निरन्तर सिखने का प्रयास कर रहे हैं।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने भी कहा हैं-

''**निज भाषा उन्नति हैं सब उन्नति को मूल।**''

हम तब तक विकसित नहीं हो सकतेए जब तक हमारी मातृभाषा को साथ लेकर नहीं चलते । इंसान कितनी भी तरक्की कर ले वह अपनी भाषा एवं संस्कृति के बिना अधूरा हैं। भारत को विश्व पटल पर विख्यात करने वाली हमारी भाषा एवं संस्कृति ही हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा में शिक्षा की प्रांसगिकता देखी जा सकती है। हिन्दी अब विश्व पटल पर अपना परचम लहरा रही है। सूचना एवं प्रोधौगिकी के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग निरन्तर बडता जा रहा हैं। कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट पर हिन्दी का प्रभाव देखा जा सकता हैं। देश की 70-80 प्रतिशत जनता हिन्दी बोलती हैं। विश्व में 100 से अधिक देशों में हिन्दी बोली जाती हैं। हिन्दी के अनेक पोर्टल उपलब्ध हैंए इन्टरनेट पर 70 से ज्यादा ई-पत्रिकाए देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं।

शिक्षा में भी हिन्दी की लोकप्रियता को देखा जा सकता हैं। नई शिक्षा निति 2020 के अनुसार मेडिकल एवं इंजीनियरिंग तक की पढाई हिन्दी माध्यम में होगी। यह तक की सभी राज्यों में प्राथमिक शिक्षा अपने राज्य की मुख्य भाषा अथवा बोली में अनिवार्य हैं। हिन्दी साहित्य के आदिकाल के कवि अमिर खुसरों ने भी कहा हैं कि 'में हिन्दी का तोता हूँ मुझसे जो भी पूछना हो हिन्दी में पूछों' अर्थात हमें संख्या ज्ञान प्राप्त करना है तो वह अपनी मातृभाषा के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता हैं।

हम वर्तमान शिक्षा पद्धति में देखे तो पायेगें कि वे बहुत सी परीक्षा अथवा पढाई जो हिन्दी में दुर्लभ थी आज वह हिन्दी माध्यम में उपलब्ध हैं। अनेक राज्यों ने अपनी प्रतियोगी परीक्षाओं को हिन्दी में संपन्न कराने का आदेश दिया है, जो एक समय सिर्फ अंग्रेजी माध्यम में ही सम्पन्न होती थी। हमारे कई महापुरूषों ने आजादी से पहले ही हिन्दी के पक्ष में अपनी लडाई प्रारंभ कर दी थी। गांधी जी, ज्योतिबा फुले, डॉ.भीमराव अम्बेडकर आदि लोगों ने हमेशा से हिन्दी एवं हिन्दी माध्यम में शिक्षा के पक्षपाती रहे है। आज भी पुरा भारत वर्ष उस पल के बारे में सोचकर गौरान्वित महसूस करता है, जब पहली बार अमेरिका जैसे देश में हमारे महापुरूष स्वामी विवेकानंद ने अपना भाषण हिन्दी में दिया था।

हिन्दी साहित्यकारों के द्वारा हिन्दी भाषा निरन्तर आगे बड रही हैं। उनकी रचनाओं का अनुवाद कई भाषाओं में किया जा रहा हैं। विदेशों से कई लोग हिन्दी सिखने के लिऐ भारत आते हैं। हिन्दी भाषा को बढावा देने के लिए भारत सरकार की अलग-अलग कार्यक्रमों एवं योजनाओं के तहत लोगों में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास कर रही हैंए और यह प्रयास सफल भी हो रहे हैं।

आज हिन्दी के बहुत सुंदर-सुंदर फान्ट मौजूद हैं जैसे- अक्षसरा, कोकिला, छान्दस आदि। वही हिन्दी भाषी छात्र आज देश के उच्च पदों पर आसीन है, जिसका कारण है उनकी भाषा एवं शिक्षा हिन्दी में हैं। अनेक संस्था, कार्यालय एवं स्कूल कालेजों में हिन्दी भाषा जानने वाले विदेशों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। विदेशों में भी हिन्दी की शिक्षा के लिये एवं अन्य संस्थाओं में हिन्दी भाषीयों की आवश्यकता को देखा जा सकता हैं। अमीर खुसरों ने कहा है कि "मैने एक बुदँ चखी है और पाया है कि घाटियों में खोया हुआ पक्षी अब तक महानदी के विस्तार से अपरिचित था।" अर्थात हम कह सकते है कि आज हम वही पक्षी बने हुऐ है, जो महानदी के महत्व को नहीं जानकर घाटियों में भटक रहे हैं। हमारा जो सपना है भारत एवं अपनी भाषा को सिरमौर बनाने का वह तभी संभव है जब हम अपनी भाषा में शिक्षित होगें। अपनी शिक्षा का माध्यम अपनी मातृभाषा होगीं। हिन्दी के नवजागरण एवं अग्रदूत भारतेन्दु हरिसचन्द्र ने भी कहा है कि-

अँगरेजी पढि के जदपि, सनगुन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन को हीन।

हिन्दी ही वह भाषा है जो हमारे विचारों को आधार प्रदान करती है। विचारों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है हिंदी। हिन्दी में जो संप्रेषण का भाव पाया जाता है वह किसी अन्य भाषा में नहीं, उदाहरण -

"संदेश नहीं में यहाँ स्वर्ग का लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।"

इस प्रकार हिन्दी भाषा एवं हिन्दी शिक्षा के द्वारा ही यह संभव हो सकता है। जब चीनए जापान जैसे देश अपनी भाषा को लेकर तरक्की कर सकते है, तो हमारे पास तो भाषा की वह शक्ति है जो दुनिया के किसी देश के पास नहीं हैं। देवनागरी लिपि अपनी उच्चारण क्षमता अथवा वैज्ञानिक क्षमता के लिए प्रसिद्ध है जो बोला जाता है वही लिखा जाता हैं। यह विशेषता मात्र हमारी हिन्दी भाषा में ही पाई जाती हैं। दुनिया के किसी भाषा में नहीं। हिन्दी भाषा में रोजगार की अपार संभावनाऐं हैं। आज के युवा यह सोचते है कि अगर हम हिन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करेगें तो हमें आगे चलकर रोजगार नहीं मिलेगाश यह गलत है। आज हर क्षेत्र में हिन्दी के अनुवादकों की निरंतर मांग बढ रही हैं। भारत के बाहर विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी को सिखाते हुऐ कई पद्धतियों का उपयोग किया जा रहा हैं। हमारे माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा हिन्दी भाषा में मेडिकल शिक्षा के पाठ्यक्रम का शुभारम्भ भोपाल में 16 अक्टूंबर 2022 को किया गया। इसमें एमबीबीएस की तीन पुस्तकों एनाटॉमी, फिजियोलॉजी और बायोकेमेस्ट्री का विमोचन किया। इस प्रकार के कार्य हिन्दी भाषा को बढावा देने के लिए किये जा रहे हैं, जिससे हमारी शिक्षा व्यवस्था सुद्रढ होगीं। और हमें अन्य किसी भाषा पर निर्भर नहीं होना पडेगा। साथ ही हर वर्ग के छात्र आसानी से अपनी रूचि के क्षेत्र अपना सकेगें। और खासकर उन छात्रों अथवा विधार्थीयों को अधिक लाभ मिलेगा जो अंग्रेजी माध्यम में होने के कारण अपनी पढाई बीच में ही छोड देते थें। जब से भारत वासियों ने आजादी का सूर्य देखा उसी दिन से उनका एक ही सपना था हिन्दी और हिन्दुस्तान। हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपनी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का ताज नहीं पहना पाए। अगर हम फिर भी यह दृढ निश्चय करें कि हमारी भाषा विश्व की सबसे शक्तिशाली भाषा बने तो उसका एक ही माध्यम हो सकता है और वह है हमारी शिक्षा। जब हमारी शिक्षा अपनी मातृभाषा में होगी तो वह दिन दूर नहीं होगा जब सम्पूर्ण विश्व में हिंदी की एक विशिष्ट पहचान होगींए साथ ही वह उस तख्त पर भी आसीन होगी जो उसे राष्ट्रभाषा का गौरव दिलायेगा।

उपर्युक्त विवेचन के द्वारा हम कह सकते है कि यह हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसके द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में विकास संभव है, फिर चाहे वह क्षेत्र रोजगार काए देश के विकास का हो अथवा व्यक्तित्व निर्माण का सभी क्षेत्र में शुभ फलदायिनी देने वाली हैए हमारी हिन्दी भाषा। इसलिए गर्व से कहिए जय हिंदी, जय हिन्दुस्तान।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. amarujal.com, 23/01/2023
2. हिन्दी भाषा: विकास और विश्लेषण, डॉ.चन्द्रभान रावत, सरस्वती प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण।
3. साकेत: मैथिलीशरण गुप्त, अष्ठम् सर्ग।

4. E- magazine, बेखबरों की खबर. 9:53, 24/01/2023
5. भाषा विज्ञान: डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास: आ. रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन